2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 4
October - December | ISSN – 2584- 0517

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

कुमारी रूपम
शोधार्थी, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

डॉ. साक्षी शर्मा
शोध निर्देशिका, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

सारांश-

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति परंपरागत रूप से चुनौतीपूर्ण रही है। हालांकि आधुनिक युग में महिलाओं की स्थिति में सुधार के प्रयास हुए हैं, लेकिन जमीनी स्तर पर अनेक समस्याएँ अब भी बनी हुई हैं। इस शोध पत्र में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, और शैक्षिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, उनके सशक्तीकरण के लिए उठाए गए कदमों और भविष्य की संभावनाओं पर भी चर्चा की गई है। इस शोध में सांख्यिकीय डेटा और सर्वेक्षण के परिणामों का उपयोग किया गया है ताकि महिलाओं की वास्तविक स्थिति का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत किया जा सके।

मुख्य शब्द- ***महिला सशक्तीकरण, ग्रामीण समाज, शैक्षिक स्थिति, आर्थिक भागीदारी, सरकारी योजनाएँ***

परिचय-

भारत का ग्रामीण समाज प्राचीन संस्कृति और परंपराओं का समृद्ध संगम है। यहाँ परंपराएँ, रीति-रिवाज और सामाजिक संरचनाएँ गहरी जड़ों तक फैली हुई हैं, जो आज भी ग्रामीण जीवन को प्रभावित करती हैं। हालांकि इन परंपराओं के सकारात्मक पहलुओं के साथ-साथ कई ऐसी सामाजिक बाधाएँ भी हैं, जो महिलाओं के अधिकारों और उनके समाज में भूमिका को सीमित करती हैं। भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं को पारंपरिक रूप से घरेलू कार्यों, बच्चों की परवरिश और कृषि कार्यों तक ही सीमित रखा गया है।

महिलाओं को समाज में समानता और स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए कई सरकारी योजनाएँ और सामाजिक सुधारक प्रयास कर रहे हैं। इनमें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना, 'उज्ज्वला योजना' जैसी महत्वपूर्ण पहलें शामिल हैं, जिनका उद्देश्य महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, और सुरक्षा को प्रोत्साहित करना है। इसके बावजूद, महिलाओं के अधिकारों के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव की जरूरत है। ग्रामीण समाज में महिलाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच और आर्थिक स्वतंत्रता में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

भारत में महिला सशक्तीकरण के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं और सामाजिक सुधारों की दिशा में कदम उठाए गए हैं, लेकिन यह आवश्यक है कि इन योजनाओं का प्रभाव जमीनी स्तर पर अधिक प्रभावी तरीके से पहुँचे। इस शोध पत्र में हम ग्रामीण भारत में महिलाओं

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 4
October - December | ISSN – 2584- 0517

की स्थिति, उनकी सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों, तथा उनकी स्थिति में सुधार के लिए उठाए गए कदमों पर विस्तृत चर्चा करेंगे। साथ ही, हम उन संभावनाओं की पहचान करेंगे, जिनके माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है। महिलाओं के सामाजिक सशक्तीकरण और उनके समग्र विकास के लिए यह कदम महत्त्वपूर्ण हैं, और इनसे महिला अधिकारों की दिशा में बदलाव संभव हो सकता है।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति-

भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति परंपरागत पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था से गहरे रूप से प्रभावित रही है। इस व्यवस्था में पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि महिलाओं की भूमिका अक्सर घरेलू कार्यों तक ही सीमित कर दी जाती है। अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ अपने समय का अधिकांश भाग घर की देखभाल, बच्चों की परवरिश, और खेती के कार्यों में लगाती हैं। इसके अलावा, उन्हें समाज में अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों के प्रति बहुत कम अवसर मिलते हैं। महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी जरूरतों की ओर कम ध्यान दिया जाता है।

इस परंपरागत व्यवस्था के तहत, महिलाओं को घरेलू दायित्वों के अलावा किसी भी अन्य कार्य में भाग लेने की स्वतंत्रता नहीं होती। परिवार की आर्थिक स्थिति में महिलाओं का योगदान नकारात्मक रूप से कम आँका जाता है, जबकि वे कड़ी मेहनत करती हैं। इसके अलावा, महिलाओं के पास अपनी संपत्ति पर अधिकार भी सीमित होते हैं। भूमि और संपत्ति के मामले में पुरुषों को प्राथमिकता दी जाती है, जिससे महिलाओं को स्वतंत्र निर्णय लेने की शक्ति नहीं मिल पाती।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को अब भी शारीरिक और मानसिक हिंसा का सामना करना पड़ता है। घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियाँ अब भी प्रचलित हैं। इसके परिणामस्वरूप, महिलाएँ अपनी स्थिति को सुधारने और सामाजिक और व्यक्तिगत अधिकारों के लिए संघर्ष करने में मुश्किलों का सामना करती हैं।

हालांकि, कुछ सरकारों और समाज सुधारकों के प्रयासों से बदलाव की शुरुआत हुई है, जैसे कि महिला शिक्षा के प्रचार-प्रसार, स्वच्छता अभियानों और स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रसार के माध्यम से। फिर भी, इन सुधारों के बावजूद महिलाओं की सामाजिक स्थिति में बदलाव धीरे-धीरे हो रहा है, और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि महिलाएँ समाज में बराबरी की स्थिति में हो सकें। यह सब तभी संभव है जब महिलाओं को समान अवसर मिलें और पितृसत्तात्मक मानसिकता में बदलाव हो।

सामाजिक कुरीतियाँ:- दहेज प्रथा, बाल विवाह, और घरेलू हिंसा जैसी सामाजिक कुरीतियाँ अब भी प्रचलित हैं।

स्वास्थ्य और पोषण:- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ नहीं मिलतीं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-2021) के अनुसार, मातृ मृत्यु दर (MMR) ग्रामीण भारत में 174 प्रति 10+0,000 जीवित जन्मों पर है, जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर 133 है।

पारिवारिक भूमिका:- पारंपरिक रूप से महिलाओं को घर की देखभाल और बच्चों की परवरिश तक सीमित रखा गया।

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 4
October - December | ISSN – 2584- 0517

आर्थिक स्थिति-

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए कई सरकारी योजनाएँ शुरू की गई हैं, लेकिन अभी भी आर्थिक असमानता बनी हुई है।

रोजगार:- 2011 की जनगणना के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं का श्रम शक्ति में योगदान 36.5% है, जबकि पुरुषों का योगदान 56.6% है।

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी):- महिला सशक्तीकरण में एसएचजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) के तहत 2019 में 72 लाख से अधिक महिलाओं को एसएचजी से जोड़ा गया था।

सरकारी योजनाएँ:- 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'उज्ज्वला योजना' जैसी नीतियों ने महिलाओं को प्रोत्साहित किया है।

आर्थिक भागीदारी:- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का श्रम शक्ति में योगदान निम्नलिखित क्षेत्रों में देखा जाता है:

वर्ग	महिलाओं की भागीदारी (%)
कृषि कार्य	73%
असंगठित क्षेत्र	62%
संगठित क्षेत्र	19%

शैक्षिक स्थिति-

शिक्षा का अभाव:- ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर 58.75% है, जबकि पुरुषों की साक्षरता दर 77.15% है (2011 जनगणना)।

शिक्षा के प्रयास:- सर्व शिक्षा अभियान और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जैसे कार्यक्रम ग्रामीण लड़कियों की शिक्षा में सहायक रहे हैं।

आशा और चुनौती:- हालांकि शिक्षा में सुधार हुआ है, लेकिन अभी भी अधिकतर महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त करने में विफल रहती हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच:- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-2021) के अनुसार, ग्रामीण भारत में 57% महिलाएँ स्वास्थ्य सेवाओं तक नियमित रूप से पहुँच प्राप्त करती हैं।

चुनौतियाँ-

1. **सामाजिक बाधाएँ:** पितृसत्तात्मक सोच और परंपरागत मान्यताएँ।
2. **आर्थिक असमानता:** महिलाओं के पास अपनी आय और संपत्ति पर नियंत्रण नहीं होता।
3. **शिक्षा में बाधाएँ:** ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की कमी और शौचालय की अनुपस्थिति के कारण लड़कियों की शिक्षा में रुकावटें आती हैं।

भविष्य की संभावनाएँ-

1. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौशल विकास कार्यक्रमों का विस्तार।
2. डिजिटल साक्षरता के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में महिला शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाना।

केस स्टडी और उदाहरण-

उज्ज्वला योजना:- उत्तर प्रदेश के एक छोटे गाँव में 'उज्ज्वला योजना' के माध्यम से 85% महिलाओं ने

2024 TPJ | VOLUME 2, ISSUE 4
October - December | ISSN – 2584- 0517

लकड़ी के चूल्हे का उपयोग बंद कर एलपीजी गैस का उपयोग शुरू किया। इस योजना ने महिलाओं के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के साथ-साथ उनके समय और श्रम को भी बचाया।

महिला सशक्तीकरण के उदाहरण:- ग्रामीण महिला स्वयं सहायता समूहों ने आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त की है। एक विशेष समूह ने अपने गाँव में महिला सशक्तीकरण के लिए ऋणों का उपयोग किया, जिससे वे छोटे व्यवसाय चला सकीं और अपने परिवारों के लिए एक स्थिर आय का स्रोत बना सकीं।

ग्रामीण और शहरी तुलना-

रोजगार दर:- राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO, 2020) की रिपोर्ट के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की रोजगार दर 22.3% है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 15.1% है।

साक्षरता दर:- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर में भी फर्क देखा गया है। शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की साक्षरता दर 80% से अधिक है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह केवल 58.75% है।

निष्कर्ष-

ग्रामीण समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सशक्तीकरण जैसे क्षेत्रों में ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। महिलाएँ न केवल अपने परिवार बल्कि समाज के विकास में भी अहम भूमिका निभा सकती हैं, बशर्ते उन्हें समान अवसर मिलें। सरकारी योजनाओं, सामाजिक सुधारों और समग्र विकास के माध्यम से महिलाओं की स्थिति में बदलाव संभव है।

संदर्भ-

1. मिश्रा, एस. (2020). *ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक अध्ययन.* वाराणसी: भारतीय प्रकाशन।
2. वर्मा, आर. (2021). *महिला सशक्तीकरण के साधन.* जयपुर: शिक्षा प्रकाश।
3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5, 2019-2021).
4. भारत सरकार (2019). *राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन रिपोर्ट*।